फ्रांससी क्रान्ति:- (1789)

कारण - संसार में आजतक जितनी भी क्रांतियाँ हुई है उनमें से कोई भी किसी एक विशेष कारण से नही हुई। क्रांतियो की तह में अनेक जटिल समस्याएँ छिपे रहते है और समय पर उनका उचित समाधान न किया जाए तो ज्वालामुखी का विस्फोट अनिवार्य हो जाता है

फ्रांस की क्रांति:-

- राजनीतिक कारण
- सामाजिक कारण
- आर्थिक कारण
- बौद्धिक जागरण

राजनीतिक कारण:-

क) निरंकुश राजतंत्र:-

राजतंत्र की निरंकुशता फ्रांस की क्रांति का महत्वपूर्ण कारण था। फ्रांस में निरंकुश राजतंत्र की स्थापना हेनरी चतुर्थ ने की थी वह बूर्बो वंश का पहला राजा था। उसके उत्तराधिकारी लुई तेरहवे के शासन काल में राजतंत्र को शक्तिशाली एवं निरंकुश बनाने का कार्य उसके प्रधानमंत्री रिशलू ने किया था। लुई तेरहवे के उत्तराधिकार लुई xiv के शासन काल में फ्रांससी राजतन्त्र निरंकुशता के चरम पर पहुच गया। सामंतवाद की समाप्ति के साथ एक ऐसी शक्तिशाली सरकार कायम हुई जो निरंकुशता का पर्याय बन गई।

शासन की पूरी शक्ति लुई xiv के हाथ में आ गयी थी इसी कारण लुई गर्व से कहता था- "मैं ही राज्य हूं"।

उसके बाद का शासक लुई xv निष्क्रिय, अयोग्य

विलासी था। उसके और दरबार के विलासी जीवन के कारण फ्रांस की आर्थिक दशा उत्तरोत्तर बिगड़ती गयी। राजा के हाथो में राजनीतिक शक्तियों का संकेन्द्रण, आर्थिक विवशता, सामाजिक असमानता तथा बौद्धिक जागरण के कारण जनता का राजा पर से विश्वास उठ गया तथा उस दिन फ्रांसिसियो ने निरंकुशता अंत करने का निश्चय कर लिया।

ख) लुई XVI का चरित्र:-

ऐसे संकट काल में अगर फ्रांस को हेनरी चतुर्थ के समान कुशल योग्य दृढ़ संकल्प राजा प्राप्त हुआ होता तो शायद सुधार आ सकता था। उसका हृदय दुर्बल एवं विचार अस्थिर थे उसमें सज्जनता थी लेकिन राजा के लिए जो गुण आवश्यक थे उसका अभाव था। वास्तव में उसकी अपनी कोई इच्छा शक्ति नही थी। उसकी पत्नी रानी मेरिया एन्त्वायनेट का उस पर निर्णयात्मक प्रभाव रहा जो उसके लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ।

ग) राजप्रसाद का विलासी जीवन:-

लुई चौदहवे के उत्तराधिकारियो का प्रशासन के कार्य से बहुत कम मतलब रहता था। भोग-विलास आमोद-प्रमोद उनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य था। राजा बड़ी शान शौकत के साथ वर्साय के राजमहल में रहता था, वर्साय पेरिस से 12 मील दूर स्थित था और लुई XIV ने तीस करोड़ खर्च करके एक अत्यंत ही आलीशान महल का निर्माण कराया था। राजा के लिए 1600 दास तथा रानी के लिए 600 दासियाँ नियुक्त थी। राजा अपने कृपापात्रो एवं चाटुकारो पर दिल खोल कर पैसा खर्च करता था। यह अनुमान किया जाता है कि लुई 16वें

क्रांति के पूर्व
ने अपने शासन के 15 वर्ष में इस प्रकार 30 करोड़ रु लुटाए थे। राजदरबार के इस अपव्यय के कारण फ्रांस उत्तरोत्तर दिवालिया होता जा रहा था।

घ) अकर्मण्य शासनतंत्र:-
इंग्लैण्ड की पार्लियामेंट की तरह फ्रांस में भी एक संसदीय संस्था थी जिसको इस्टेट जनरल कहते थे, परन्तु वहां के शासक, दरबारी इतने अकर्मण्य थे कि लगभग 175 वर्ष से इस्टेट जनरल का अधिवेशन नही हुआ था। स्थानीय संस्थाए निर्जीव हो गयी थी स्थिति ऐसी हो गयी थी कि 1789 में जब इस्टेट जनरल के चुनाव की बात चली तो कोई भी जीवित व्यक्ति ये नही जानता था कि इसके चुनाव और संगठन कैसे हो।

ङ) शासन पद्धति में अवगुण:-
फ्रांस में शासन के अन्दर अत्यधिक गोपनीयता ने भ्रष्टाचार और संदेह को पनपने का अवसर दिया। फ्रांस मे न तो आय व्यय का कोई हिसाब था और न संसदीय आलोचना थी। नतीजा यह होता था कि सरकार पर उन सभी अच्छे या बुरे कार्यो का उत्तरदायित्व मढ़ा जाता था जिसके लिए वह उत्तरदायी नही रहती थी। यदि सार्वजनिक नीति का संचालन सार्वजनिक तौर पर किया जाता तो क्रांति के अवसर पर सरकार पर लोगो का संदेह उस प्रकार न होता जिस प्रकार हुआ था। इस प्रकार प्रशासन की गोपनीयता ने बहुत बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार को भी जन्म दिया जो क्रान्ति का एक महान कारण था।

च) सभी प्रकार की स्वतंत्रताओ का अभाव- भाषण, लेखन, विचार, अभिव्यक्ति को फ्रांस मे दबा दिया गया था। निरंकुश शासन पद्धति में भी इन स्वतंत्रताओ को महत्व दिया जा सकता है। जब सतायी गयी प्रजा को कोई

study time
Page No.:
Date: / /

कोई रास्ता नही मिलता, तो वह क्रांति कर बैठती है
यदि कुछ मात्रा में उसे उपर्युक्त स्वतंत्रता दे दी जाए तो
यह है कि निरंकुश शासन की यातनाओ के विरुद्ध बोलकर
वह कुछ समय के लिए अपने गुस्से को शांत कर लो

राजा की निरंकुशता के विरुद्ध जनता किसी भी प्रकार का आवाज नही उठा सकती थी क्योंकि भाषण, लेखनी प्रकाशन पर जबर्दस्त प्रतिबन्ध लगा रखे थे। आलोचना के अभाव मे राजा समझता गया कि उसके राज्य में पूर्ण व्यवस्था है पर जनता में असंतोष की आग सुलग रही थी जो एकाएक क्रांति के रूप में प्रज्जवलित हो गयी।

सामाजिक कारण:-

क्रांति के पूर्व के फ्रांससी समाज का आधार सामंतवादी प्रथा थी जिसके ~~कारण~~ अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का कार्य उसके जन्म के अनुसार बटा है।

1) असमानता - प्रमुख कारण क्रांति का सामाजिक असमानता थी। नेपोलियन ने कहा था - "फ्रेन्च क्रांति विशेषाधिकार सम्पन्न वर्गो के विरुद्ध राष्ट्र का एक जनव्यापक आन्दोलन था।" सम्पूर्ण फ्रांससी समाज सामाजिक असमानता पर आधारित थी, विशेषाधिकार ने सारे समाज को तीन वर्गो में विभाजित कर दिया था।

धर्माधिकारी   सामन्त   साधारण वर्ग

धर्माधिकारी, सामन्त वर्ग सभी विशेषाधिकारो का प्रयोग कर रहे थे वे इन्हे बनाए रखने के लिए कटिबद्ध थे। इसलिए क्रान्ति हुई और क्रांति ने मे सभी प्रकार के विशेषाधिकार नष्ट कर दिए।

2) पादरी वर्ग :-

पादरी वर्ग के लोग प्रथम इस्टेट के सदस्य कहलाते थे। फ्रांस में रोमन कैथोलिक चर्च की प्रधानता थी सारे फ्रांस में इसका बोलबाला था कहा जाता है कि फ्रांस का चर्च राज्य के अन्दर राज्य के समान था। इसकी एक अलग ही सरकार थी जो चर्च की भूमि तथा सम्पत्ति का प्रबंध कराती थी। इसका अपना संगठन था न्यायालय थे।

⇒ पादरियों के चल अचल संपत्ति पर कर नही लगाया जाता था।

⇒ पादरियों की भी दो श्रेणी थी – उच्च पादरी / निम्न पादरी

प्रथम श्रेणी में आर्चविशप, कार्डिनल, एबाट चर्च के उच्च पदाधिकारी सम्मिलित थे और दूसरी श्रेणी साधारण पादरियों की थी। निम्न पादरी वर्ग अधिकतर किसान होते थे इनकी दशा अत्यंत दयनीय थी। फ्रांस में जब क्रांति शुरू हुई तो उस समय इन्होंने क्रांति के अग्रदूत का काम किया।

सामन्त वर्ग :- सामन्त या अभिजात्य वर्ग के लोग द्वितीय इस्टेट कहलाते थे इन्हे कई तरह की सुविधाएं प्राप्त थी फ्रांस की भूमि में 1/4 भाग कुलीन वर्ग का था। राज्य, चर्च, सेना के उच्च पदो पर ये लोग विराजमान थे। इस वर्ग में धनी और अमीर दोनो थे किन्तु दोनो समान रूप से किसानो का शोषण करते थे किसानो से तरह-२ के सामन्ती कर, अन्य देय और बेगारी लेते थे।

सुविधाहीन वर्ग (किसान) :-

सुविधाहीन वर्ग को तृतीय इस्टेट कहा जाता था जिसमे किसान, दस्तकार मजदूर आते थे। इस वर्ग के लोगो की संख्या सबसे अधिक थी। कृषको को राज्य, चर्च, जमींदार को अनेक प्रकार के कर देने होते थे। सार्वजनिक कार्य जैसे सड़क आदि बनाने के लिए किसानो को मुफ्त में खटना पड़ता था

मध्यम वर्ग :-

फ्रांससी समाज का मध्यम वर्ग सर्वाधिक प्रबुद्ध था कहा जाता है कि क्रांति का आरंभ इसी वर्ग ने किया। इस वर्ग में समाज के सम्पन्न, शिक्षित, साहित्यिक, डाक्टर, वकील, शिक्षक, जज, व्यापारी, कारखानों के मालिक आदि शामिल थे। संक्षेप में फ्रांस के धन, व्यापार, मस्तिष्क पर इन्हीं का कब्जा था।

परन्तु बुद्धि एवं धन में सम्पन्न होने के बाद भी समाज में इनकी स्थिति और राजनीतिक संस्थाओं पर कोई प्रभाव न था। यह वर्ग चाहता था कि देश की राजनीति पर उसी वर्ग का प्रभाव हो, नियंत्रण हो जो हर दृष्टि से योग्य हो। नेपोलियन ने सेन्ट हेलेना में सत्य ही कहा था कि - "फ्रांससी क्रान्ति का मूल कारण स्वतंत्रता नहीं, बल्कि मध्यम वर्ग की समानता की चाह थी। मध्यम वर्ग के लोग कुलीनों के साथ सामाजिक समता प्राप्त करना चाहते थे ये क्रांति के नारों, समानता, स्वतंत्रता एवं भ्रातृत्व में समानता पर अधिक जोर देते थे

आर्थिक कारण :-

क्रांति के अवसर पर फ्रांस की आर्थिक स्थिति एकदम अस्त व्यस्त हो गयी थी। यह स्थिति इतनी खराब हो चुकी थी कि अन्ततः इसी को लेकर फ्रांस में क्रांति प्रारंभ हुई। विदेशी युद्ध और राजमहल पर अपव्यय के कारण फ्रांस की आर्थिक स्थिति एकदम डावाँडोल हो गयी थी। प्रति वर्ष आय से अधिक व्यय होता था।

⇒ दूषित कर प्रणाली - कर प्रणाली इतनी अन्यायपूर्ण तथा पक्षपातपूर्ण थी कि राज्य के राजस्व की बहुत हानि हो रही थी। यह व्यवस्था प्रतिगामी और विशेषाधिकारों पर आधारित थी।

राज्य को केवल साधारण वर्ग के लोग ही कर देते थे कुलीन तथा पादरी वर्ग के लोगो को इससे मुक्ति मिल गयी थी, कृषक वर्ग की दशा अत्यन्त दयनीय हो गयी थी वह राज्य को नमक कर, भूमि कर तथा चर्च को टाइथ कर देता था। क्रांति के कुछ वर्ष पूर्व करो का बोझ उनपर इतना बढ़ गया कि वे दम भी नही ले सकते थे। वे ऐसे अवसर की प्रतीक्षा मे थे जो उनको इस असहनीय स्थिति से छुटकारा दिलाता।

⇒ अति अपव्ययी दरबार:- आर्थिक दुर्व्यवस्था का दूसरा कारण राज दरबार की अपव्ययता थी, लुई XIV ने भव्य वार्सय प्रासादो का निर्माण किया, लुई XV विलासी था, लुई XVI के दरबार का व्यय 10 करोड़ डालर वार्षिक था। इस स्थिति में फ्रांस के राजाओ को मितव्ययिता से काम लेना चाहिए था लेकिन वे ऐसा नही कर सके, देश की आर्थिक व्यवस्था रसातल में चली जाए लेकिन अपने खर्च में किसी प्रकार की कमी को तैयार नही थे। खजाना खाली होने पर सरकार की ओर से कर्ज लिया जाने लगा, कहा जाता है कि क्रांति के अवसर पर फ्रांसीसी सरकार पर 60 करोड़ डालर का ऋण था।

→ औद्योगिक क्रांति:-

इस समय औद्योगिक क्रांति का प्रारंभ हो चुका था। राज्य क्रांति के पहले फ्रांस में थोड़ा बहुत मशीनो का प्रयोग शुरु हो गया था इसके कारण फ्रांस में आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया था हाथ से काम करने वाले कारीगार अब मशीन से प्रतियोगिता नही कर सकते थे इस कारण फ्रांस में कई कुटीर उद्योग धंधे बंद हो गये और देश में बेरोजगारी की समस्या बढ़ गयी, ऐसे लोग रोजगार की खोज में पेरिस पहुच गये। फ्रांस में जिस समय क्रांति प्रारंभ हुई उस समय इन लोगो ने क्रांति को लाने और आगे बढाने में बहुत बड़ा योगदान था।

Abha